सम्पादक के नाम

प्लास्टिक कानून के तहत किस पॉलीथिन को हटाया जाएगा ?

कुरकुरे की पैकिंग बदली जाएगी या अंकल चिप्स की? या किसी और बड़ी कम्पनी की ??जैसे अमूल , कैडबरी, पारले, ब्रिटनिया ? हिन्दुस्तान लिवर लि.के शैम्पू, सोप, बिस्किट के प्लास्टिक रैपर चलने देंगे और गरीब तार से घासनी बनाके पैकिंग ना करे कुछ दाल में काला जरूर है।

जी नही ..... ये तो सिर्फ आम दुकानदार या गरीब रेहड़ी वाले ही पिसेंगे इस सरकारी चक्की में। इस नियम को लागू करने से पहले कोई वैकल्पिक साधन नही सुझाया गया। कैसे कोई समोसे लेने गया व्यक्ति सब्जी या चटनी कपड़े के थैले में डाल के घर लाएगा ? ऑफिस से घर आता व्यक्ति दही को क्या अपनी जेब में डाल के लाएगा?

कहने का तात्पर्य ये है की इस पाबन्दी से सिर्फ़ घरेलू दुकानदारों की तबाही होगी। हलवाईयों का सबसे ज़्यादा नुकसान होगा। गृह उद्योग बंद हो जाएंगे। पापड़, चकली, फरसाण बनाने वाले क्या करेंगे ? क्योंकि हल्दीराम, बालाजी को पैकिग पे तो कोई बंदी नही। घर घर बनने वाली मोमबत्ती, अगरबत्ती, पत्रावली, कपास की बाती, मसाले, अब पैकिंग के लिये क्या यूज़ करें? सरकार कुछ पर्याय दे तो बात बने।

मोजे, टी शर्ट, ड्रेसेस, ड्रेस मटीरियल, गारमेंट, रुमाल, साड़ियाँ, धूल-मिट्टी और बरसात से बचाने हेतु किस में पैकिग करायें ? घर की छत जब बरसात में पानी टपकाए तो ग़रीब क्या करें? बेकरी प्रोडक्ट्स- याने ब्रेड, खारी, टोस्ट, बिस्किट, पाव बेकरी वाले क्या करें?

विदेशी पिज़्ज़ा और बर्गर के साथ तो सॉस के पाउच दे दिए जाएंगे पॉलीथिन के (जिन पे कोई पाबन्दी नही) लेकिन वह दुकानदार जिसने खुद की बनाई हुई सब्जी या चटनी बेचनी है वो क्या करेगा? अमूल का दही भी पैक में, मक्खन भी और घी भी, सब पॉली पैक में आते हैं फिर ग्राहक तो अपनी सुविधा को देखते हुए लोकल सामान खरीदेगा ही नहीं। इस पर फिर से विचार होना जरूरी है।

या तो इसे पूरी तरह से लागू करो चाहे नुक्कड़ की हलवाई की दुकान हो या मल्टीनेशनल कम्पनी पॉलीथिन पर पाबन्दी मतलब पूरी पाबन्दी। अपने शहर के आम व्यापारियों को बचाने के लिए उन्हें समर्थन दिजिये।

- साइबर नजर

सैफ अली खान लंदन में कह रहे हैं कि भारत में सरकार की आलोचना करने पर आपकी हत्या हो सकती है....

वेबसाइट द क्विंट से बातचीत में उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं पता कि भारत में कोई सरकार की कितनी आलोचना कर सकता है लंदन के समाज की भारत से तुलना करते हुए उन्होंने कहा, मैं अभी लंदन में हूं...आपसे बैठा बात कर रहा हूं, यह एक बेहद ही खुला समाज है...लोग ट्रंप के आने के खिलाफ यहां प्रदर्शन कर रहे हैं, मेयर ने उनसे हद में रहने को कहा है, लेकिन उन्हें अपने विचार व्यक्त करने की आजादी है।

सैफ ने आगे कहा, मुझे नहीं पता भारत में आप सरकार की कितनी आलोचना कर सकते हैं, कोई आपकी हत्या कर सकता है, मध्य पूर्व के देशों में अगर आप इस्लाम के खिलाफ कुछ कहते हैं, जैसा कि सलमान रुश्दी ने कहा है तो आपके खिलाफ फतवा जारी हो जाएगा, पश्चिमी दुनिया कहती है कि यहां बोलने की एकदम आजादी नहीं है, लेकिन ये सच है, कई जगहों पर आजादी बिल्कुल भी नहीं हैं।

सैफ अली खान ने भारत की जातीय व्यवस्था पर भी सवाल उठाये। सैफ ने कहा, यदि आप अपने से अलग किसी दूसरी जाति के व्यक्ति को डेट करते है, तो भारत के कुछ हिस्सों में लोग आपको जान से मार सकते हैं, वहां पर ऐसा ही है।

वैसे बोल सही रहे हो सैफ भाई लेकिन आप भी मन ही मन डर रहे हो इसलिए ही तो आपकी नेट सीरीज सैक्रेड गेम्स का किरदार राजीव गाँधी को भला बुरा बोल रहा है। जरा एक बार राष्ट्रवादी दल के नेताओ पर बोल कर तो बताए ! लंदन तक ही दौड़ा दिया जाएगा आपको.....

- गिरीश मालवीय

दलित समाज में पैदा हुई हिमा दास ने किया भारत का नाम रौशन

हिमा दास, असम के छोटे से गांव की 18 साल की मासूम सी लड़की जिसने आईएएएफ विश्व अंडर-20 एथलेटिक्स चैम्पियनशिप की 400 मीटर दौड़ स्पर्धा में गोल्ड मेडल जीतकर देश का गौरव बढाया है ।

इस इवेंट में देश को पहली बार गोल्ड मेडल हासिल हुआ है। हिमा ने महिला, पुरुष, जूनियर, सीनियर सभी वर्गों में पहली बार वर्ल्ड ट्रैक इवेन्ट में गोल्ड जीता है वो भी 51.46 सेकेण्ड के रिकॉर्ड समय में। जो काम अब तक कोई भारतीय नहीं कर पाया वो हिमा ने किया है।

हिमा असम के नगाँव जिले के धींग के पास कंधूलिमरी गाँव से हैं। उसके पिता रोंजीत दास और मां जोमालि चावल की खेती करते हैं। बेहद गरीब परिवार से आने वाली हिमा 6 बहन-भाइयों में सबसे बड़ी है। तमाम मुश्किलों को हराते हुए हिमा ने ये क़ामयाबी हासिल की है।

शाबाश हिमा! तुमने हर आम लड़की के सपने को हिम्मत दी है । अब कुछ और लडकियां जिनके सपने आखों में ही मार दिये जाते हैं द्य ऐसे सपने साकार करने के लिए वे भी अब आगे आयेंगी।

बधाई हिमा ढेरो बधाई।

- सुमेधा धानी

अग्निवेश पर हमला- हिंदू धर्म की आँत में धँसा हिंदुत्व का बल्लम !

पंकज श्रीवास्तव

झारखंड के पाकुड़ में स्वामी अग्निवेश की पिटाई भारतीय समाज के बर्बर होते जाने की निशानी है। भारतीय संस्कृति और धर्म का झंडा बुलंद करने वाले, आरएसएस प्रेरित भारतीय जनता युवा मोर्चा के कार्यकर्ता एक अस्सी साल के भगवाधारी बुज़ुर्ग को लात-जूतों से पीट रहे हैं क्योंकि उसके कुछ विचार उन्हें ठीक नहीं लगते। आरोप है कि अग्निवेश ने अमरनाथ यात्रा को पाखंड कहा और वे नक्सल समर्थक हैं।

चार साल के मोदी राज का यही हासिल है। उन्हें विकास के लिए हिंदुस्तान दिया गया था, उन्होंने लिंचिस्तान बना दिया। सुप्रीम कोर्ट के कल के आदेश के बाद (जिसमें उसने भीड़ के हमले से होने वाली मौतों को लेकर कड़े क़ानून बनाने को कहा है) इस पर कोई शक़ नहीं रह जाता। मोदी राज में करोड़ों बेरोज़गारों को नौकरी देने के बजाय उनकी आँख पर नफ़रत की पट्टी बाँधकर हाथों में धर्म की म्यान में छिपी अधर्म की तलवार थमा दी गई। जिसके विचार न रुचे, उसका रुधिर बहा दो।

अगर स्वामी अग्निवेश ने कोई अपराध किया है तो अदालत है, मुकदमा चलाइए। लेकिन इस तरह गिरा कर पीटना!

न यह भारत की परंपरा है और न हिंदू धर्म में इसके लिए जगह है। स्वामी अग्निवेश पहले व्यक्ति नहीं हैं जिन्होंने अमरनाथ को दैवी चमत्कार मानने से इंकार किया है या शिवलिंग की पूजा को पाखंड कहा है। ऐसा कहने वालों की भारत में लंबी परंपरा है। यहाँ तक कि उन्हें ऋषि का दर्जा भी दिया गया। भारत में ईश्वर को मानने के साथ न मानने वाले भी पूजे गए हैं। न्याय और वेदांत को छोड़कर भारत के प्रमुख दर्शनों में शामिल सांख्य, योग, वैशेषिक, बौद्ध और जैन अनीश्वरवादी दर्शन ही हैं। इनके अध्येताओं का चतुर्दिक सम्मान होता रहा। महावीर और गौतम बुद्ध तो ईश्वर के समकक्ष ही हो गए। तमाम दर्शनों के बीच वाद-विवाद, खंडन-मंडन, शास्त्रार्थ से ही प्राचीन भारत का बौद्धिक परिदृश्य बनता है। ईशनिंदकों की जान नहीं ले ली जाती थी। आत्मा-परमात्मा, जीव-ब्रह्म-माया की गूँज के बीच चार्वाक जैसे भौतिकतावादी दर्शन के प्रणेता को भी ऋषि का दर्जा दिया गया जो वेदों की खुली निंदा करते थे।

हाँ, भारतीय उपमहाद्वीप ऐसा ही था जिसे समंदर पार से आने वाले व्यापारी हिंदुस्तान कहने लगे। यह संयोग नहीं कि धर्म के नाम पर 'हिंदू' शब्द किसी धर्मग्रंथ में नहीं मिलता। धर्म के नाम पर कोई एकीकृत तंत्र नहीं था। विविधिता ही भारत की पहचान थी। मूलतः पंचदेवोपासना' होती थी। अलग-अलग इलाक़ो में अलग-अलग देवताओं का जलवा था। सूर्य की पूजा करने वाले सौर कहलाते थे, शक्ति की पूजा करने वाले शाक्त। गणपति पूजने वाले गाणपत्य थे तो विष्णु और शिव को पूजने वाले क्रमशः वैष्णव और शैव। सबको अपनी तरह रहने की आज़ादी थी। संघर्ष भी रहे होंगे, लेकिन विचार की वजह से किसी का क़त्ल अधर्म ही माना जाता था।

बहुत बाद में तुलसीदास ने भी धर्म की जो परिभाषा दी, उसमें कहा- परहित सरस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई!

यानी धर्म ने सिखाया कि किसी को पीड़ा देना अधर्म है। तो फिर ये धर्मध्वाजाधारी कौन हैं जिन्होंने 80 बरस के एक आर्यसमाजी भगवाधारी को हिंदू धर्म के अपमान के नाम पर बुरी तरह पीट दिया। स्वामी अग्निवेश के गुरु ने तो न जाने क्या-क्या कहा था, पर इन हमलावरों के पुरखों ने तो कभी उन पर हमला संगठित नहीं किया। शायद इसलिए कि वे हिंदू धर्म का मर्म समझते थे, जबकि ये हमलावर 'हिंदुत्व के नागपुरी घृणागह्वर' में डूबे हैं।

बात मूलशंकर की हो जाए ताकि बात स्पष्ट हो।

1824 में गुजरात में जन्में मूल शंकर को थोड़ा बड़े होने पर आश्चर्य हुआ कि शिवलिंग पर चढ़ाया गया भोग एक चूहा खा रहा है। उसने पिता से प्रश्न किया कि जो भगवान एक चूहे से खुद की रक्षा नहीं कर सकता, वह हमारी रक्षा क्या करेगा। तर्क की यह चिंगारी बाद में विराट अग्नि के रूप में प्रज्जवलित हुई। मूलशंकर स्वामी दयानंद सरस्वती के रूप में जाने गए। उन्होंने 1874 में आर्यसमाज की स्थापना की। मूर्तिपूजा को पाखंड बताया और वेदों को छोड़कर किसी भी अन्य धर्मग्रंथ को प्रमाण मानने से इंकार कर दिया। ऐसा उन्होंने छिप कर नहीं किया। वे देश भर में घूम-घूमकर ऐसा कर रहे थे। 1867 में हरिद्वार में कुंभ आयोजित था। लाखों लोग वहाँ पुण्य कमाने पहुँचे हुए थे। दयानंद ने ऋषिकेश मार्ग पर सप्तसरोवर के पास अपना डेरा डाला और कुटिया के बाहर एक डंडा गाड़कर उस पर पताका लगाई। पताका पर लिखा- 'पाखंड खंडिनी पताका।'धीरे-धीरे लोगों की भीड़ इकट्ठा होने लगी। स्वामी जी ने उपदेश देना शुरू किया। उन्होंने साफ़ कहा कि हर की पैड़ी पर नहाने का कोई फ़ायदा नहीं है। सत्कर्म करो और वेदों का अध्ययन करो। वही परमात्मा की वाणी हैं। समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, पाखंडो, आडंबरों, मूर्तिपूजा, भागवत-पुराण, तीर्थयात्रा आदि को व्यर्थ बताते हुए वे भक्तों के उस विराट जमावड़े के बीच जमे रहे। उनके ख़िलाफ़ कोई संगठित हिंसक अभियान नहीं चला। अगर किसी ने छिटपुट ऐसा करने की कोशिश की तो निंदा हुई।

स्वामी दयानंद सरस्वती बाद में काशी भी पहुँचे जहाँ दुर्गाकुंड के पास पंडितों के साथ उनका मशहूर शास्त्रार्थ हुआ। जय-पराजय को लेकर तमाम विवाद हैं, लेकिन स्वीमी जी के सम्मान में कोई आँच नहीं आई। दुर्गाकुंड से सटे एक पार्क में आज भी एक स्मारक मौजूद है जो उस शास्त्रार्थ की याद दिलाता है। तो क्या काशी में तब धार्मिक लोग नहीं रहते थे। 'शिव के त्रिशूल पर बसी काशी' और 'कंकर-कंकर शंकर' जैसी आस्था वालो का खून दयानंद सरस्वती के वचनों से क्यों न खौला? दरअसल, तब 'हिंदुत्व' का जन्म नहीं हुआ था। वहाँ बस हिंदू ही थे। कृपया 'हिंदुत्व' को धर्म मानने की भूल न करें। किसी धर्मग्रंथ में इसका ज़िक्र नहीं है। यह 1923 में आई किताब का नाम है जिसे अंग्रेजों से माफ़ी माँगकर कालापानी से रत्नागिरी पहुँचे विनायक दामोदर सावरकर ने लिखी थी। उन्होंने भी हिंदुत्व को राजनीतिक विचारधारा ही माना है। ऐसी राजनीति, जो सत्ता पाने के लिए कितना भी खून बहा सकती है। बहाया भी। बीसवीं सदी के महानतम हिंदू कहे गए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की हत्या इन्हीं सावरकर के हिंदुत्ववादी चेले नाथूराम गोडसे ने की थी।

हिंदू धर्म में जो भी शुभ है, हिंदुत्व उस पर विकट प्रहार है!

दयानंद सरस्वती के वैचारिक वंशज स्वामी अग्निवेश पर यह हमला भी विशुद्ध राजनीतिक उद्देश्यों के लिए है। बीते चार सालों में सामान्य मानवीय विवेक को नष्ट करने का संगठित अभियान चला है। ऐसे लोगों की भीड़ तैयार की गई है जिनके पास न शास्त्रार्थ करने की क्षमता है और न धर्म का मर्म समझने की। यह 2019 के चुनाव के लिए दीक्षित किए गए गुंडे हैं और नफ़रती तूफ़ान पैदा करने के लिए किसी की हत्या भी कर सकते हैं, फिर चाहे वह 80 साल का बुज़ुर्ग ही क्यों न हो।

हिंदुओं के जिन पुरखों ने दार्शनिक ऊँचाइयाँ छुई थीं, उन्होंने एक मंत्र दिया था- अयं बंधुरयम नेति गणना लघु चेतसाम। उदारचरितानाम तु वसुधैव कुटुम्बकम ।।

अर्थात- यह मेरा भाई है, वह नहीं है, ऐसी गणनी नीच लोग करते हैं। उदार चरित्र वालों के लिए तो पूरी पृथ्वी ही परिवार है।

ऐसे ही मंत्रों के लिए भारत विश्वगुरु प्रसिद्ध हुआ था बिना किसी पी.आर.एजेंसी की मदद के। लेकिन अब रात दिन अपना-पराया (हिंदु-मुसलमान) करने वाले ऐसे ही नीच नेताओं से लेकर पत्रकारों तक की जमात भारत के आकाश पर उल्लासनृत्य कर रही है और धरती पर अंधकार गहरा रहा है। यह स्वामी अग्निवेश पर हमले की नहीं, हिंदू धर्म की आँतों में धँसे हिंदुत्व के बल्लम की तस्वीर है।

स्वामी अग्निवेश ने पाखंड पर क्या कहा.....

जब नरेन्द्र मोदी बतौर प्रधान मंत्री नेपाल और बांग्लादेश जाते है तो वहां जाकर 2-2 घंटे तक पूजा-पाठ करते है, मंदिर में रहते है, जो कि गैर -संवैधानिक है, क्योंकि वहां वे सिर्फ खुद के बजाय पूरे देश का प्रतिनिधित्व करते हैं और इस रवैए से वे भारत की धर्म - निरपेक्ष छवि का खंडन करते हैं। यही नहीं, समाज में फैले अन्य मान्यताओं को लेकर भी स्वामीजी ने अपने विचार प्रस्तुत किए. उन्होंने अमरनाथ, तिरुपति और सबरीमाला मंदिर दर्शन के पीछे छिपे अंधविश्वास के ऊपर चोट की।

खासकर अमरनाथ के बारे में यह कहा कि जिसको लोग बरफानी बाबा या फिर शिवलिंग समझते है वो तो असल में स्कूली भूगोल में पढ़ाया जाने वाला स्टेलेगमाइट (stalagmite) और स्टेलैकटाइट (stalactite) मात्र है । ये एक प्राकृतिक घटना है जिसका देवत्व या धर्म से कोई भी रिश्ता नहीं है। इस तीर्थ पर खर्च किए गए रुपए और संपदा जिसमें सेना के जवानों का भी सहयोग लिया जाता है सब एक धोखा है, पाखंड है। एक वर्ष अमरनाथ यात्रा से पहले सारा का सारा बर्फ ग्लोबल वार्मिंग की वजह से पिघल गया। उसके बाद गवर्नर जनरल एस. के. सिन्हा की देखरेख में हेलीकॉप्टर द्वारा कृत्रिम बर्फ ले जाया गया और शिवलिंग का निर्माण हुआ ताकि भक्तों की आस्था को ठेस न पहुंचे। कुम्भ मेले को लेकर स्वामीजी ने कहा कि उसको लेकर भी लोगों के मन में अंधविश्वास बैठा हुआ है। लोगों को लगता है कि कुंभ स्नान करने की वजह से उनके पाप धुल जाएंगे। लेकिन कुंभ मेले में गए हुए श्रद्धालुओं के बीच भगदड़ की वजह से कइयों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है।